कुछ न कीजिए और खूब कमाईए

दवाई की जानकारी निचे है, मजर बिमारी क्यों होती है? ९०० प्रतिशत नफा कैसे मिलेगा? वह जानकारी पहले पढिए और घरमें या मकान की छत पर कार्य करके पूरा फायदा लें, बाद में बिमारी से छुटकारा पाने औषधी की जानकारी पढे।

खाना सभी को है मगर उगाना कोई नही चाहता !! क्योंकि, लोग खाब्ब में भी नहीं सोच सकते कि, जुताई, रासायनिक खाद, जहरिली दवाईयाँ और निराई (खरपतवार) के बिना भी कृषि करना संभव है। सन १९६० मे, स्व. श्री. भास्कर हिराजी सावे जो उमरगाँव-गुजरात के किसान थे, उनके विचार से कृषि के सारे काम 'भगवान' के चक्रो द्वारा मुफ्त में होतें हैं, इसीलिए पिछले ५५ साल से सावेजी का परिवार आधुनिक कृषि की मदद बिनाही, सब से अधिक उत्पादन प्राप्त करनेवाले भारत के प्रथम किसान बने है। 'कल्पवृक्ष फार्म' के १५ एकड़ भूमि में सावेजी पहले आधुनिक कृषि-पद्धति से खेती करते थे, मगर सन १९५७ की साल में उसी कार्य-पद्धति से भारी नुकसान उठाना पड़ा। तीन साल में सावेजी को आधुनिक कृषि के सारे बुरे पहेलुं समझ में आ गये, उन्होंने जाना कि, खेती में नुकसान आने का कारण कम महेनत और जमीन कमजोर न थी, मगर आधुनिक कृषि की मायाजाल और उसीके साथ जुड़ी हुई कार्य-पद्धति मुख्य कारण था।

आधुनिक कृषि कार्य-पद्धति में, ट्रेक्टरों से होनेवाली गहरी जुताई, रासायनिक खाद, जहरिली दवाईयों का छीड़काव, बेहद पानी का सिंचन और बारबार होनेवाली निराई से जमीन की रचना और उपजाव शक्ति खत्म होती है। सावेजी को कृषि का सच्चा ज्ञान 'भगवान' के चक्र को देखकर और आध्यात्मिक **'जियो और जिने दो'** की बातें समझने के बाद आया था। सावेजी ने देखा था कि, पहाड़ के उपर ही जंगल का विकास बहुती अच्छी तरह होता है और पेड़-पौधों की जड़े लम्बे और गहराई तक जाती है। जुताई, खाद, पानी, दवा और निराई (खरपतवार) बिना ही, जंगल के पेड़-पौधे हर साल एक समान उत्पादन देते हैं। इस बात का सिर्फ एक ही कारण है कि, 'भगवान' के बनाए जंगल में मानव का कोईभी हस्तक्षेप नही होता।

'भगवान' के बनाअे चक्रो की मदद लेते हुए सन १९६० की साल में सावेजी ने एक छोटासा प्रयोग जैविक कृषि का किया। उस प्रयोग में सावेजी के खेतों का उत्पादन घटकर ५० प्रतिशत हो गया, फिर भी मुनाफा काफी हुआ! वह कैसे? रसायणों से भरपूर आधुनिक कृषि में सावेजी को रु.१००/- की कमाई के लिए रु.८०/- का खर्च होता था और कबी कबात मिला तो सिर्फ रु.२०/- का मुनाफा, जबकि नये प्रयोग में कमाई हुई सिर्फ रु.५०/- मगर सावेजी ने पानी सिंचन के अलावा कुछ नहीं किया इसलिए खर्च हुआ सिर्फ रु.१०/- का, इस प्रकार सावेजी को रु.४०/- का मुनाफा हुआ। सिर्फ इतना ही नहीं सावेजी को निरोगी उपज भी मिली। इस प्रयोग के बाद अनपढ़ मनुष्य भी समझ जाता है कि, उसे सिर्फ ज्यादा उपज जरुरी है या शुद्ध उपज की? साथ ही साथ मुनाफा जरुरी है या आधुनिक कृषी मे बेहद खर्च करके बेवकुफ बनानेवाला सिर्फ झहरीला उत्पादन चाहिए? आधुनिक कृषि का मायाजाल और अधिक उत्पादन का जब भ्रम टुटा तब बिना खर्च और आधुनिक कृषि से भी ज्यादा और शुद्ध उत्पादन जैविक कृषि से कैसे मिलेगा? इस बात की खोज़ और प्रयोग करने के कामों में सावेजी जुट गये थे। आपभी जैविक कृषि की बांते समझकर घर के आंगन या मकान की छतपर प्लास्टीक बेगमें घर में रोज उपयोग होने वाली सबजी उगा शकते हो।

सावेजी ने संशोधन और निरीक्षण से 'भगवान' के वैज्ञानिक चक्र, जीवों की मदद, सेन्द्रिय खाद और खुद की कार्य-पद्धति को जोड़कर भारी सफलता प्राप्त की है। 'श्री सावेजी की कृषि-पद्धति' का अनुभव और ज्ञान आज खेती काम के लिए एक बडा वरदान है, क्योंकि जैविक कृषि की उपज़ में **शरीर को लगनेवाले सारे के सारे १२ पोषक तत्व मौजुद है।** उसीसे ही निरोगी जीवन मिलता है, पर्यावरण की रक्षा होती है, बिना खर्च पशुधन को घरमें रख शकते हैं और सबसे बड़ा फायदा, जीसे लोग

अनपढ़ कहते है, वैसे किसान को कम से कम पानी, लागत, महेनत और कृषि के ज्ञान बिना भी शुद्ध और अधिक उपज़ के साथसाथ भारी मुनाफा भी मिलता है। सावेजी को यह सफलता कई सालों के प्रयोग और अनुभव के बाद मिली है, इसलिए सावेजी बारबार दोहराते है कि **'मेरे खेत ही मेरे लिए स्कुल, कॉलेज और विद्यापीठ हैं।'** जहाँ मुझे काम करने से सच्चा ज्ञान प्राप्त हुआ कि, **'कुछ न कीजिए और जैविक कृषि के द्वारा खूब कमाईए करें।'**

सावेजी ने किसान समाज की भलाई के लिए किसी भी लालच और अपेक्षा बिना, खुद की खोज के सारे राज लोगों के चरणों में समर्पित किये हैं। **'बिना आचरण उपदेश व्यर्थ है।'** यह बात ध्यान में रखते हुए सावेजी बताते है कि, 'किसान किसी भी कार्य-पद्धति से खेती करे, सभी खेती-पद्धति मुख्यत: पाँच नियमों पर ही काम करती हैं और वह सभी काम 'भगवान' के चक्र मुफ्त में करके देतें हैं।' 'भगवान' की फौज और चक्र कैसे काम करते है? वह संक्षेप में निचे पढें।

१) जुताई : 'भगवान' की फौज जीस में कीड़े-मकोडे, जीव-जन्तु, मुख्यरुप में केंचुएं जैसे जीवात्मा खुद की जीने की कार्य-पद्धति द्वारा जमीन में सुरंग जैसे छोटे-छोटे छेद करते है, इसीसे हवा-पानी का आना-जाना संभव होता है। साथ ही वहीं जीवात्मा के मल द्वारा मिट्टी उपजाऊ बनती है, इसी कारण **'किसान के सच्चे मित्र केंचुएं'** को कहा जाता है जबकी ट्रेक्टर तेल (डिझल) खाकर मिट्टी और पर्यावरण दोनों को हानी करता है।

२) खाद : जमीन की उपजाऊ शक्ति बढ़ा ने के लिए सुखे पत्ते, गोबर, घर से निकला हुआ सब्जी का कचरा आदि.... उसीका ही उपयोग खेतों में होता है। यह सेन्द्रिय पदार्थ पेड-पौधों या जमीन के लिए खाद नहीं मगर पशु और जमीन के अंदर रहनेवाले जीवात्मा का अन्न है, वह इसे खाकर मल द्वारा पेड-पौधों के लिए खाद बनाकर देते है। जब कुदरत की फौजो से खाद मुफ्त में मिलता हो, तो फिर **ज़हरीले रासायनिक खाद खरीदने की बेवकुफी कौन करेगा?**

३) पानी : ज्यादा करके किसान थाले के पास बेहद सिंचन करके जड़ों का गला ही दबा देते हैं और इसी कारण से पानी अनेक फीट की गहराई में गया है। जबकि 'पेड और नाली' साथ में 'क्रोटन पौधा' के सुचन के बाद ही पानी सिंचन पेड़ से १२ से १५ फीट की दूरी से होता है, इसी से ८० प्रतिशत पानी की बचत होती है। इस कार्य-पद्धति के कारण कुआं और बोरवेल के पानी भंडार में वृद्धि होती है। क्योंकि **खेतो में पेड-पौधों को पानी नही सिर्फ नमी जरुरी है।**

४) फसल की रक्षा : जरुरत होने पर 'भगवान' की दी हुई सेन्द्रिय चीजों का ही उपयोग करके घोल तैयार करें। जीवजन्तुं को फसल से दूर रखने के लिए गौमुत्र, नीम, तुलशी और वह उग्र वनस्पति जिसे बकरी भी नहीं खाती, उसी से तैयार किया हुआ घोल का उपयोग करें। वैसे भी कुदरत ने लाल चींटी, मकड़ा, छिपकली, मेंढक जैसे कई जीवात्मा की रचना की है, जो खुद के वजन से भी अधिक जन्तु को एक ही दिन में खा जाते है। घुवड़, गिद्ध, कौआ, चील जैसे पक्षी चूंहों का शिकार करते हैं, उसी प्रकार कुदरत के कई जीव-जन्तुं, पशु-पंछी खुद को दिये हुए काम बखुबी से करते हैं। इसी के साथ एक आध्यात्मिक बात के उपर भी ध्यान दे जो सभी धार्मिक ग्रंथो में लिखा है कि 'हम सब मनुष्य इस संसार में एक रक्षक के रुप में खाली हाथ आये हैं और खाली हाथ लौटना है, इसलिए सुख और शान्ति से **'जियो और दुसरों को भी जिने दो।'** संसार के रचईता ब्रह्मा, विष्णू और महेश प्रभुजी जब खुद के कुदरती चक्र को बराबर चला रहे हैं, तो फिर ज़हरीली दवाईयों का छिड़काव करके, निर्दोष जीव-जन्तु की हत्या करके पाप की गठ्ठरी हम क्यों बांधे? 'भगवान' के कामो मे हस्तक्षेप करना, निर्दोष जिवों के प्राण हरना और किऐ हुए सारे पापो के कारण, किसी न किसी प्रकार जीवन मे दु:ख आते ही है।

५) खरपतवार: लगातर उगने वाले घास को किसान सरदर्द और दुश्मन समझते है। मगर सच तो यह है कि, **'घास तो कुदरत का एक बड़ा वरदान है।'** कुदरत ने ज़डो को एक शक्ति दी है जिस से वह वनस्पति परिवार के लिए पानी, कच्चा माल और नाइट्रोजन की गठ्ठान प्रदान कर सके। घास धरती माता के लिए 'कपडा' और पेड-पौधों की ज़डों द्वारा सुरक्षीत रखे हुए भंडार को, सूर्य की तेज किरणों से बचाने का काम करते हैं। कुदरत के इस वरदान को कभी उखाड कर फेंकना नहीं, जरुरत होनेपर

सर से बाल काटे जातें हैं उसी प्रकार, घास काटकर पशुधन को खाने दिजीए। इसी से गोबर, फसल रक्षा और मनुष्य की बिमारी दुर करनेवाली दवाईयाँ, दूध और ट्रान्सपोर्ट में काम आनेवाले बैल प्राप्त होंगे। इतना सब पशुधन से मुफ्त मिलता है फिरभी, आज पशुधन को कसाई के हाथो काटने के लिए लाईन में खडा कर दिया है, वाह भारत वाह, बहुती सुंदर प्रगती हो रही है !!

सावेजी तो गांधीबापु के भक्त थे और बापु की तरह ही एक समाज और विश्वबंधुत्व की भावना रखते थें। सावेजी ने खुद के आर्थिक बल के अनुसार, जीतना हो सके उतना जैविक कृषि का प्रचार किया था। मगर सिर्फ आध्यात्मिक बातें नहीं, बल्की वैज्ञानिक और कमाई के ठोस सबुत लोग बारबार मांगते है। लोग फार्म की मुलाकात के लिए जरुर आते हैं और बिना खर्च-महेनत से मिलती हुई उपज को देखकर दंग रह जाते हैं, मगर अफसोस यह है कि, किसान आधुनिक कृषि को छोडकर जैविक कृषि को अपनाने से घभराते है। वह भला क्यों? क्योंकि आज का किसान पूरी तरह से आधुनिक कृषि की मायाजाल में फंस चुका है और सावकार और बैंक के कर्जो में सम्पूर्णत: डूब चुका है, इसलिए वह ड़र रहे हैं की आधुनिक कृषि छोडने से मुशिबतें बढ गई तों? इसीलिए जैविक कृषि की बातें ख्वाब में भी किसान नही सोच सकते है! और जब आधुनिक कृषी में पूरी तरह डूब जाते हैं तब आत्महत्या करके जीवन समाप्त करतें है।

यह बात हम सभी समझते है कि, 'निरोगी जीवन के लिए निरोगी आहार जरुरी है।' मगर आज ज़हरीली, खाद और दवा के छिड़काव के कारण सभी खेतो की उपज जहरीली, कम पोषकवाली और बिना स्वाद की तैयार होती है, जिसे खाने से मानव रोगीष्ट होता है। अब रोग, बीमारी, अशक्ति और विलायती दवा के सहारे हम कबतक और कितने दिनों तक जीवित रहेंगे?

मै अशोक संघवी-मुंबई मे रहनेवाला २१ वर्ष की आयुमें ही बाजारमे मिलनेवाले ज़हरीले खुराक का शिकार हुआ। पूरे विश्व में जीस रोग का इलाज संभव नही वैसे जोड़ों का दर्द-वात-रुमेटज़्मि की बीमारी मुझे और मेरे माताजी को हुई। तब मे कुदरती इलाज और शुध्ध आहार पाने के लिए, एक व्यापारी होते हुए भी कृषि का मार्ग अपनाया। मगर मुझे तो खेती के बारे में अ,ब,क, तक की जानकारी न थी ! जानकारी पाने के लिए मे 'कल्पवृक्ष फार्म' पर सावेजी से मुलाकात की और जैविक कृषि देखकर भारी प्रभावित हुआ। तब मैने 'संघवी फार्म' की २४ एकड़ बंजर भूमिपर, 'श्री सावे जैविक कृषि पद्धति' की शुरुआत सन १९८७ में की। पत्थरोंवाली बंजर जमीन, जहाँ घास का तीनका तक नहीं निकलता, वहाँ कम खर्च, पानी और महेनत से सिर्फ चार महिनों में ही निरोगी सब्जी की उपज, जैविक कृषि पद्धति के ठोस सबुत और बहुत बड़ा मुनाफा मुझे मिला। साथीसाथ मेरी सारी बिमारी छुमंतर हुई। सावे पद्धति को बखुबी से सिद्ध करने वाले थे, सावेजी के पूत्र **श्री नरेश और सुरेश सावे**। इस सफलता से हमे, बिना खर्च और सिर्फ पानी द्वारा सबसे अधिक उत्पादन करने वाले किसान के कारण **लिमका बुक ओफ रेकोर्ड** में स्थान मिला। मुझे जैविक कृषि की महत्वता समझ में आई, तब समाज के लाभ के लिए सावे पद्धति के प्रचार का काम मैने शुरु किये।

सावेजी की जैविक कृषि कार्य-पद्धति से मुझे खेती का ज्ञान प्राप्त हुआ और उसीसे मैने जाना कि 'पर्यावरण की रक्षा, सभी के निरोगी जीवन के लिए और समृद्धि पाने का यह सिर्फ एक ही मार्ग है और समाज को हरहाल में इसकि जानकारी मिलनी ही चाहिए।' किसानों की आत्महत्या रोकने और पर्यावरण की रक्षा करने का अनुष्ठान पूर्ण करने की भावना रखते हुए, मैने जीवन की एक प्रथम पुस्तक लिखी। इस पुस्तक में ९०० प्रतिशत मुनाफा और सभी नई-पुरानी बीमारी बिना खर्च से छुटकारा पाने की जानकारी मैने दी है। **'देखो और फिर विश्वास करो।'** इस कार्य के लिए हमने हर शनिवार को फार्मपर लोंगो को आनेका आमंत्रण दिया। देश-विदेश की संस्था और लोगों को जैविक कृषि के वौज्ञनानिक ठोस सबुत, भरपूर उपज और मिलनेवाले मुनाफे की जानकारी दिखाकर, हम कई सालों से समाज को अपना योगदान दे रहे हैं। सभी को लाभ देने हेतु से मैने 'श्री सावे

सेन्द्रिय कृषि पद्धति' जो विश्व की प्रथम कार्य-पद्धति है और देश को इस बात का फायदा हो इसलिए मैने 'पेटन रजीस्ट्री' करना उचीत समजा। उस वक्त मैने सरकार से मदद की उम्मीद रखी, मगर आजतक सरकार से नाही कोई जवाब मिला और नाही किसी भी प्रकार का प्रोत्साहन मिला। किस कारणों से? सब से बड़ा कारण है आधुनिक कृषि की संस्थाएं (कृषि लोबी) जो जैविक कृषि के प्रचार में बाधा खडी करते हैं, फिरभी सावेजी के संशोधण के लीए हमे देश-विदेश के कई पुरष्कार मिले है, वह जानकारी Achievements विभागमें पढीऐ।

देश-विदेश की कई संस्था खाद, दवा, बीज, ट्रेक्टर आदि, भारत में आधुनिक कृषि के नाम से बेचते है। पैसों के जोरसे बारबार इश्तेहार दिखकर देशवासी को मायाजाल में बांधकर रखे ते है। एकबार आधुनिक विज्ञान से चार गुना उपज दिखाकर, किसान समाज की आँखो में मिट्टी डाल दी और उपज जब घट गई तो, सारा दोष किसानों के सर थोप दीया। यह कहकर कि 'किसान अनपढ़ हैं और खाद-दवा की मात्रा की सही जानकारी नहीं रखता।' कोइभी विदेशी मायाजाल से छूट न जाए, इस कारण वे रोज नई नई योजनाए किसान और लोगों के सामने रखते हैं। देखा जाए तो विदेशी कंपनीयाँ काफी चालाक है, एक ओर वही कंपनीयाँ के आधुनिक कृषि उत्पादन के कारखाने है तो दुसरी ओर वही कंपनीयाँ बीमारी ठीक करने की दवाईयाँ बनाने का उद्योग भी चला रही है और जब ज़हरीले आहार द्वारा सभी बीमार होते है, तब पोषक तत्व दे रहे हैं, इस प्रकार का जुठा प्रचार करके, एसिड (प्रिजर्वेटिव) डाले हुए, टीन फूड़, टॉनीक और बीमारी ठीक करने की बहुत सारी दवाईयाँ हमे बेचते हैं, इस प्रकार दोनों हाथों से वह कमाई करके भारत देश को लूट ने का काम करते है। यही बात जरा संक्षेप में देखें। कृषि में अधिक उत्पादन के लिए आधुनिक कृषि का जन्म हुआ, उसी तरह ज्यादा दुध और अंडे के लिए जर्सी गाय और बोईलर मुर्गीयां बनाई। इसीके साथसाथ समाज में मेड काऊ, बर्ड फ्लू, केन्सर नपुंसकता और अनेक नई बीमारीयों का जन्म हुआ। इतना ही नही भारत जैसे अहिंसा में माननेवालें देश में आतंकवाद का जन्म हुआ और देश का पशुधन काटने की शुरूवात भी हुई।

आज आधुनिक संस्कृति, कृषि और विज्ञान के कारण लोगों के शरीर कमजोर होकर रोगीष्ट हुए है। आधुनिक दवा काफी महंगी है, जो आम आदमी खरीद नही सकता। सब से बडी बात, इस दवाईयों से कोई भी फायदा नहीं मिलता क्योंकि यह सारी दवाईयां कुदरत के नियन विरुद्ध शरीर में काम कर रहीं है। इस बात का एक ठोस सबुत देखीए। हम बीमारी ठीक करने के लिए दिन-प्रतिदिन दवा की मात्रा वढाते है और कई बीमारी में तो डॉक्टर हमे जिंदगी भर दवाईयाँ खाने की सलाह देते है! इसी विलायती दवाई के कारण, हम जब पथ्थर नही खाते फिरभी स्टोन होता है! इसी प्रकार सारी बिमारी की जड विलायती दवाई ही है। यह सभी बातों का मुख्य कारण है, कुदरत से मिले हुए मुफ्त शरीर में कचरा भरना, जीवों और पर्यावरण की और हमारा दूर्लक्ष। इतनी सारी बरबादी के बाद, हमें क्या बोधपाठ मिलता है? सरल शब्दों में इसका उत्तर है **कुदरती की और लौट चलो।** जिंदा रहने के लिए जरुरी है **रोटी कपड़ा और मकान।** समझो की कपड़ा और मकान नहीं मिलते तो भी जींदगी बसर होती है, मगर ज़हरीली खुराक खाकर कितने दिनों तक जीवन बसर होगा? इसी कारण निरोगी जीवन के लिए ज़रुरी है जैविक कृषि करना या फिर जैविक कृषि का ही उत्पादन खरीदना। अफसोस तो इस बात का है की, आज भी भारत देश में पर्यावरण के बारे में, बीमारी दूर करने के लिए कुदरती उपचार और पूर्वज की जैविक कृषि का ज्ञान, किसी भी स्कुल या कॉलेज में नहीं मिलता, इसी कारण मजबुर होकर लोग आधुनिक दवा और कृषि का ही झहरीला उत्पाद खाकर बीमार रहेते हैं।

आज आमदनी से अधिक तो खर्च है, इसीलिए कृषि प्रधान देश के लोगो ने खेती छोड़कर नौकरी का दामन थामा है। किसानो ने ज्यादा उपज की लालच में और कई लोगो ने घरकी जरुरतो को पूरा करने, बैंक से लोन या क्रेडीट कार्ड लिए है। जब लोग कर्ज में डूब जाते है, तब छूटकारा पाने के लिए गधे के समान दिनरात काम करके, बीमारी के शिकार होते हैं। तब निरोगी जीवन की चाहत में डॉक्टर और आधुनिक दवाईयाँ के चुंगल में फसतें है। फिर धन के साथसाथ शरीर के कई महत्व पूर्जे कटवाकर

जीवनभर दुखी रहते हैं। इस प्रकार की कठीन परिस्थिति से बचने के लिए सावे-संघवी विनंती कर रहे है कि, 'जैविक कृषि अपनाकर और घी समान पानी का सिंचन करके, हमनें जैसे निरोगी जीवन, सुख, समृद्धि, आनंद और शान्ति का मार्ग चुना है, आप भी चुन लें।' इस बात की सही जानकारी देने हेतु सावे-संघवी, भरत मनसाटेने कल्पवृक्ष फार्मपर 'जैविक और कुदरती कृषि का प्रशिक्षण केन्द्र शुरु किया है। एक साथ २० लोगो कों फार्म पर जैविक कृषि के ठोस सबुत, निरोगी जीवन पाने की जानकारी, खराब की हुई जमीन बीना खर्च उपजाऊ बनाने की सारी जानकारी के साथ भरपूर कमाईए का मार्गदर्शन भी देतें हैं। हो सके तो आपभी इस प्रशिक्षण केन्द्र का लाभ लीजिए। अगर आप यह प्रशिक्षण केन्द्र में हिसा लेना चाहते हो तो Training Classes विभाग मे रखा फोंम को भर कर अपना नाम दर्ज कराले।

कृषि के धर्म में लोगों का साथ-सहयोग मिले, किसानों की आत्महत्या रुक जाए और भारत विदेशी चुंगल से बचे ऐसे प्रचार की भावना हम सावे-संघवी आज भी रखते हैं। अब जैविक कृषीसे फायदा कैसे लेना यह जानकारी आपने पा ली है। अब मै अशोक संघवी १२ दवाई से १५ दिनोमे कोईभी बिमारी ठीक करने की जानकारी आपके चरणों में समर्पीत कर रहा हुँ।

१२०० रोग सिर्फ १२ दवाई से ठीक होते है। 'भगवान' ने मानव शरीर मुख्य १२ क्षार- दवाई से बनाया है इसीलिए शरीर में जब एक क्षार कम या बढ जानेपर, उसे हम रोग समझते हैं। अभ्यास करके शरीर को कोनसे क्षार की जरुरत है वह जानकार भरपाई करने से कोईभी बिमारी ठीक होती है। वह १२ दवाईया की बोटलं किसीभी होम्योपेथी दवाईं बेचनेवाली दुकान से मिल जाएगी। वह १२ दवाई के 6X पावर की बोटल लिजिए। निचे जो दवा के नाम लिखे हैं उसीके आगे मैने नंबर लिखे हैं वह सारे नंबर बोटल पर लिखकर रखें, जिससे दवाई फौरन पहेचानने में आशानी होगी। दवाई के साथसाथ अंग्रेजी तारीख लिखी है अगर आपका जन्म उसी समय का हो तो वह आपके जविन के लीए एक उपयोगी दवाई हो सकती है, यह बात कई डोक्टरने राशी-चक्र के आधार पर खोज निकाली है। यह १२ दवाई के गुणधर्म और कोनकोनसे रोग पर यह उपयोगी है वह जानकारी मेरी पुस्तक में लिखी है। या वही जानकारी इसी वेबसाईड के Organic Medicines विभाग में पढीऐ।

1) कल्केरीआ फ्लोर (Calcarea Fluor - 6X) – Dt. 21/06 to 20/07 केन्सर, गले की गिल्टी अथवा किसी भी शारीरिक अङ्ग की वृद्धि, हाथ-पाँवो का फटना, रसैली, बवासीर, गुहेरी, अण्ड-वृद्धि, चेहरे पर लाल रङ्ग की फुन्सियाँ, त्वचा का मोटा तथा कड़ा हो जान, कण्ठ-प्रदाह, जीभ का फटना, स्त्रियों को मासिक धर्म आरम्भ होने से पूर्व शूल-वेदना, प्रसव के बाद रक्त-स्त्राव, श्वास, कफ, जोड़ों की सूजन आदि में हितकर है ।

2) कल्केरीआ फोस (Calcarea Phos - 6X) - Dt. 21/12 to 19/01 हड्डी की सारी शिकायत, बच्चे के दांत की सारी शिकायत, स्मरण-शक्ति की कमी, सिर में पानी उतरना, केश गिरना, आँखों में दर्द, सूजन, आँखों के आगे चिनगारियाँ सी उड़ना, नाक, कान में खुजली, दर्द, जीभ पर सूजन, दाँत में दर्द, फेफड़ों में शूल, सूजाक, पथरी, धातु-क्षीणता, प्रदर, प्रमेह, मूत्राधिक्य, हड्डी पर घाव, पुरानी गठिया, गर्भस्त्राव, जुकाम के साथ ज्वर, गुदा के किनारों का फटना आदि में हितकर है ।

3) कल्केरीआ सल्फ (Calacrea Sulph - 6X) - Dt. 24/10 to 22/11 सिर में घाव, सिर-दर्द, मूर्च्छा, मितली, आँखो की लाली, जुकाम, खाँसी, फोड़े-फुन्सी, मुँहासे, कण्ठ में सूजन और घाव, हड्डी में दर्द, उपदंश, सूजाक, अग्नि से जलने के घाव, टायफाइड, अनिद्रा, जलोदर, भगन्दर, पुराना फोड़ा आदि में हितकर है ।

4) फेरम फोस (Ferrum Phos - 6X) - Dt. 19/02 to 20/03 किसीभी प्रकार का भुखार, रक्त-नलिकाओं के फट जाने के कारण रक्तस्त्राव, चक्कर, लपकन जैसी पीड़ा, कर्ण-शूल, नकशीर, चेहरे का लाल हो जान, मुँह में छाले, गला दुखना,

आवाज बैठना, खूनी बवासीर, बहुमूत्र, गर्म ऋतु की वमन शोथ, चेचक, ज्वर, नसों का फूलना आदि में हितकर है ।

5) काली मुर (Kali Mur - 6X) - Dt. 21/05 to 21/06 पाण्डु, प्लीहा, यकृत-वृद्धि, सफेद पीव निकलने वाले नेत्र-रोग, कान में दर्द, कान में पूय-स्त्राव, चेहरे पर सूजन, मुँह में घाव, गर्दन की अकड़न, अफरा, अजीर्ण, पीठ में दर्द, कफ, खाँसी, जलोदर, ज्वर, टाइफाइड, मिर्गी और पेट की सारी बिमारी में हितकर है ।

6) काली फोस (Kali Phos - 6X) – Dt. 21/03 to 20/04 वायुगोला, गुल्म, अनियमित-नाड़ी, श्वास का रुक-रुककर चलना, कमजोरी, स्वभाव में चिड़चिड़ापन, गर्दन का अकड़ना, दन्त-रोग, संग्रहणी, मासिक-धर्म में विलम्ब, पित्ती उछलना, प्रसूति-ज्वर, पेचिश, संग्रहणी, ब्रेन और हार्ट के सारी बिमारी में हितकर है ।

7) काली सल्फ (Kali Sulph - 6X) - Dt. 22/08 to 23/09 चक्कर आना, सिर दर्द, बाल गिरना, कान में दर्द, पुराना जुकाम, नाक में कीड़े, गर्दन एवं कमर में दर्द, अजीर्ण, मासिक धर्म की अनियमितता, बगल की गाँठ, गठिया के कारण ज्वर, फोड़ा-फुन्सी से मवाद निकलना, गठिया का चलता-फिरता दर्द, दुर्गन्धित दस्त, चर्म रोग, बहेनों का ब्युटी क्रिम है यह।

8) मेग्नशिया फोस (Magnesia Phos - 6X) Dt. 21/07 to 21/08 सिर-दर्द, आँखों में कीचड़ और शोथ, घ्राण-शक्ति का ह्रास, मुँह में पानी भर आना, हिचकी, गले में सिकुड़न, पेट-दर्द के सारे रोग, आमाशय के रोग, कुकर खाँसी, आँतो में दर्द, मिर्गी, दाँती भिंचना, हिस्टीरिया, सूजन, हकलाहट, कंपवात, गेस का गोला उठना, प्रसव-वेदना आदि में हितकर है ।

9) नेट्रम मुर (Naturm Mur - 6X) - Dt. 20/01 to 18/02 चिन्ता, दुःख, उदासी, सिर-दर्द, कनपटी में दर्द, पलको में खुजली, नाक की बीमारियाँ, पित्त-वमन, मवाद निकलने वाले चर्म-रोग, कीट-दंश, सब प्रकार के ज्वर, टायफाइड, तिल्ली-वृद्धि, प्यास, भोजन के बाद थकान, सन्धि के दर्द, जलोदर, स्तन में पानी की गठान आदि में हितकर है ।

10) नेट्रम फोस (Naturm Phos - 6X) - Dt. 24/09 to 23/10 स्मरण-शक्ति की दुर्बलता, दृष्टि-क्षीणता, कान के छिद्र में जलन, नाक में खरोंच, पतले दस्त, आमाशय की पुरानी दुर्बलता, खट्टी वमन, छाजन, पीठ तथा गर्दन में दर्द, कृमि, स्थान बदलने वाला गठिया, यकृत् में कड़ापन, बार-बार पेशाब आना, हलका में कुछ अटका हुआ सा लगना, जी मिचलाना, अजीर्ण मुहँ में खटा पानी आना, बच्चो के पेट में करम- बाल जैसे किडे, डायाबिटिस आदि में हितकर है ।

11) नेट्रम सल्फ (Naturm Sulph - 6X) - Dt. 21/04 to 20/05 मस्तिष्क में शिथलता, पित्ताधिक्य, आँखें-दुखना, जलन, छाले, छींकयुक्त जुकाम, धातु-क्षीणता, प्रसूता का प्रदर, पाण्डु-रोग, मलेरिया, पारी का ज्वर, पुराना अतिसार, हाथ, पाँव तथा बाजू में चींटी-सी रेगना, बगल में कखौरी, मासिक-स्त्राव देर से या बहुत कम आना, गर्दन की गिल्टियों में सूजन, किडनी के रोग, लिवर की सिकायत आदि में हितकर है ।

12) सिलिशिया (Silica - 6X) - Dt. 23/11 to 20/12 सिर पर दुर्गन्धित पसीना आना, गुहेरी, कान का पकना तथा मवाद बहना, नाक के भीतर फुन्सी, हड्डियों के घाव से सड़ा मवाद निकलना, कण्ठ की गिल्टियाँ, पुराना अजीर्ण, गुदा का नासूर, पुराना उपदंश या सूजाक, श्वेत प्रदर, जननेन्द्रिय की खुजली, बालों का गिरना, मांस बढ़ाना, गठान, घाव आदि में हितकर है ।

समाज सेवा ही प्रभुजी की सच्ची सेवा है ।

श्रीमान / श्रीमती,

प्रभुजी का प्रसाद (दवाई) श्रद्धापूर्वक, धैर्य और सिर्फ १५ दिनों तक परहेज करते हुए लिजिए। इस निर्दोष दवाईं का सेवन करेंगे, तो बिमारी का नाम कुछभी हो वह सारी बीमारियां ठीक होती है। मै अशोक संघवी पिछले ४० सालसे इस बायोकेमिक दवाई का

उपयोग कर रहा हुँ और डोक्टर न होने के बावजुद मेरे अनुभव से मेरे परिवार और समाज के अन्य कई लोगोंके रोग मैंने मुफ्तमे ठीक किए है क्योंकि, **इस दवाई की शरीर पर कोई बुरी असर नहीं होती**, असल में जर्मन डोक्टर ने यह दवाई २०० साल पहले खोजी थी, यह दवाई दुध के पावडर से बनी मिठी गोली है और उसे चुस चुस कर गलाकर खानी है। इस दवाई का फायदा फौरन होता है इसलीए जबभी यह दवाई लेनी हो तब १५ मिनिट आगे और १५ मिनिट बाद ही पानी या खाना लें। सबसे जरुरी बात अगर आप अपने शरीर को कचरा भरने का डिब्बा समझ कर कोल्ड्रींक, सिगरेट, शराब, गुटखा, तम्बाकू खातें हों तो सायद 'भगवान' भी आपकी मददत नहीं कर शकतें, इसीलिए रोग से छुटकारा पाने के लिए परहेज और योगा-कसरत बहुती जरुरी है।

परहेज : 'भगवान' की यह १२ दवा एक प्रसादी है, इसलीए उपयोग करते समय मांस, मच्छी, अंडे, कॉफी, लहसुन, प्याज, मिठाई, ब्रेड, मक्खन, चीज, क्रीम, मैदा, बिस्कूट, चॉकलेट, आचार, ज्यादा तिखा, कची या तली हुई मिरची, खटाई डालकर बनाये हुए खाद्य पदार्थ, इमली, ठंडा पानी, आइस्क्रीम, कोल्ड्रींक, सिगरेट, शराब, गुटखा, तम्बाकू, तला हुआ और जो स्वाद में खट्टा हो वह १५ दिनों तक तो बिलकूल न खाएं । यह परहेज आपके शरीर को शुध्ध करने के लीए जरूरी है तभी तो आपको बिमारी से छुटकारा मिलेगा। बडों के लीए ३ से ५ गोली और १० साल से छोटे बचे के लीए १ से २ गोली लेना उचीत है।

शुभ प्रभात : सुबह उठकर प्रथम एक या दो ग्लास गरम जल लेकर बाद में ही दांत साफ करें। ब्रश के बाद जबान को हो सके इतना बहार निकाल कर तीन अंगुली से जबान के पीछले हिसे को इस प्रकार से धिसें जीससे उबाल आये या फिर उलटी जैसा हो, याद रहे रोज सुबह **सिर्फ चार या पाँच बार** ही यह जबान धिस कर उबाल लानेका प्रयत्न करें, जबरदस्ती से पानी न निकाले। इसी प्रयोग से शायद पेट में होगा तो खटा या कडवा पानी निकलेगा, जिसे युरीक एसीड कहा जातां है और जोडों – वात जैसे दर्द से फोरन छुटकारा मिलता है। इस प्रयोग से जबाल के पिछले हिसे में जमा हुआ बलगम जरुर निकलेगा और आंखों से पानी भी, इस प्रयोज से आँख - दृष्टि साफ होती है, चश्मा के नंगर गायब होत हैं। में यह प्रयोग पिछले ४० साल से करतां हुँ इस कारण आँखोमें पानी आता है और इसी कारण मुझे आँखो से मोतीया गायब हुआ, जोडों का दर्द गया, टट्टी साफ आने के कारण पेट साफ होवा और इसी कारण आज ७० वर्ष की आयु में सभी बिमारी छु-मंतर हुई है। कुल्ला करके आंखो पर पानी छिडकने के बाद, पहले खाली पेट दवाई नंबर **4/5/8/10** गोली ले। कम के कम १५ मिनट घूमने या कसरत करने के बाद दूध या चाय, नास्ते में गरम रोटी, आलू पराठा, उपमा, पोहा खा सकते है । फल में सफरजन (सेब), चीकू, पपीता, कलिंगर, खरबूजा, खा सकते हैं, सभी ड्राईफुट खा सकते है। नास्ते के ३० मिनिट बाद दवाई नंबर **2** और **6** की गोली ले।

दोपहर का भोजन : भोजन के १५ मिनट पहले दवाई नंबर **4/5/8/10** की गोलियों का रस चूसकर ले, १५ मिनट के बाद भोजन करें । सलाद, रोटी, सभी सबजी और चावल का भोजन करे। खाने के ३० मिनिट बाद दवाई नंबर **2** और **6** की गोली ले।

शाम : अंग्रेजी में १२ दवाई की जानकारी पढें और राशी-चक्र के आधार पर लिखी गोली जरूरी हो तो ले। खाने की इच्छा हो तो, दोसा, इडली या सुबह के समान नास्ता और फल खा सकते हैं । बगैर बर्फ गन्ने का रस और नींबू शरबत ले शकते हैं।

रात्री भोजन : भोजन के १५ मिनट पहले दवाई नंबर **4/5/8/10** की गोली ले। रात्री-भोजन कम से कम करना चाहिए, मतलब कि खिचडी, सब्जी रोटी और दाल-चावल ही लेना उचित है। भोजन के बाद पेट से गेस निकालने के लिए थोडी देर घूमने जरूर जाए। सोने से पहले दवाई नंबर **2** और **6** की गोली ले और १५ मिनट बाद एक गिलास सादा पानी पीकर प्रभुजी का समरण करके सो जाइए। पूरी रात दवाई अपना काम करेगा और सुबह उल्टी, पेशाब और मल के द्वारा खराब एसिड निकल जायेगा।

सुचना : अगर आप अन्य कोई विलायती दवाईयां लंबे समय से उपयोग कर रहें हो, तो उसे फौरन बंध मत किजीए क्योंकि, विदेशी खुद की लिखी किताबों को पढाकर डोक्टर तैयार करतें हैं और उन्ही के द्वारा हमारे शरीर को झहरीली दवाई की आदत बनाई जाती है। विलायती दवाई के साथ १५ से ३० मिनिट का अंतर रखकर यह दवाई भी ले शकतें हैं। १५ दिनो में जरा सा भी फायदा दिखाई पडे उसी के बाद, धिरेधिरे खुद ही खुद के डोक्टर बन कर विलायती दवाई धीरेधीरे १ /२/ ३ दिनों का अंतर रखकर छोड दे तभी तो संपूर्ण बिमारी से छुटकार और निरोगी जिवन मिलेगा। **एक जरुरी सुचना** मैंने जो नंबर और

परहेज बताए है अगर १५ दिनो मे बिलकुल ही आराम न हो तो ही अन्य नंबर के बारे मैं सुचना। अगर आप इन्टरनेट पर Biochemical Twelve Tissue Medicines for रोग का नाम टाईप करोगे तो विश्व के कई डोक्टर यही १२ दवाई के बारे मे मुफ्त मार्गदर्शन करते है। आपका विश्वाष पैदा करने के लीए मैं सिर्फ यही कंहुगा कि, कोईभी बिमारी एक रात मे आती नही और एक रातमे उसीसे छुटकारा मिलता भी नही, इसलीए धिरज रखना बहुती जरुरी है और अगर विलायती दवाई वाकईमे शरीर को उपयोगी होती तो बिमारी कुच्छ दिनोमें तो ठीक होनी चाहिऐ मगर, वही विलायती दवाई की पढाई करनेवाले डोक्टर हमें दवा और मात्रा बढाकर जिवन भर झहरीली दवाई खाने की सुचना देते हैं और हमे लुटते हैँ। वही दवाई खिलानेवाले बडेवडे कई डोक्टरों को मैंने वही झहरीली दवाई खाने के बाद घुटघुट कर मरते देखा है और कई अैसे डोक्टर भी है जो मेरे से दवाईं मुफ्त लेकर खातें भी है। यह भी जान लीजिए कि, बिमारी ठीक होने के बाद जरुर न हो तो यह १२ दचाई भी बंध कर दे और सिर्फ जैविक शुध्ध भोजन लिजीए और जरुर होने पर यही दवाई फिरसे शुरु कर शकते हैं, कारण एक ही प्रकार के क्षार शरीर में कम या बढने से ही बिमारी आती है।

डोकटर या फिर आप जैसे ज्ञानी लोग दवाई खाकर भी ठीक क्यों नही होते? प्रतिदिन बिमारी बढती है !! ठीक क्यों नही होती? क्योंकि, हामारा शरीर बना है १२ क्षार से और आधुनिक कृषी से मिलते है सिर्फ ३ (N.P.K.) और वहभी झहरीले, जबकी जैविक कृषी से मिलते है १२ क्षार और वह भी १०० प्रतीसद शुध्ध. इसलिए, अगर हम जैविक कृषी करे या फिर उसी के द्वारा की उपज को खरीदे तो ही हमें बिमारी नही होगी या बिल्कुल कम होगी।

पशु धन है, गाय हमारी माता है, अैसी बाते हजारों वर्षो से हम सुनते आये है और यह सारी बातें सच भी है, क्योंकि गाय से हमें दूध मिलता है, खेती के लिए खाद के स्वरूप गोबर मिलता है, फसल रक्षा के लिए गौमुत्र मिलता है और ट्रान्सर्पोट के लिए बैल मिलते है। जब इतने सारे फायदे मिल रहे हों, तो फिर अैसा क्या कारण है कि, लोग पशु को घरमें रखने के बजाय कसाई को बेच रहे है? गोरोने कोनसी ऐसी योजना बनाई थी जिस कारण देश आजभी लूटा जा रहा है? देश को फिरसे कृषी प्रधान बनाने के लिए पशुधन घर घर में होना जरुरी है ओर बिना कोईभी खर्च हम उसे रख शकते हैं। पशु को घर में रखने का आसन तरीका मेरी लिखी किताब में पढे, किताब की जानकारी मेरी इसी वेबसाईट है। १९६० से हम वह जैविक कृषी कर रहे हैं और वह कृषी से १२ क्षार मिलते है उसी के सारे ठोस सबुत हमारे पास है, वही देखकरी हमे देश-विदेश से कई पुरस्कार मिले है।

धनवानों को मेरी विनंती है हम खाली हाथ आऐ हैं और खाली हाथ जाना है, इसलिए जिवन में कुच्छ अैसा कर के जाऐ की दुनिया आपको याद रखें, आप और सरकार साथ दे तो हम जैविक कृषी की प्रथम विध्याल बांधने के लिए हमारी जमीन देश के लिए देने को तैयार है और हमे मिली सारी जानकारी देकर सेवा करने को भी तैयार है। में बारबार विनंती करने का कारण यह है कि, हम उमरगाँव मे २० साल से केन्सर ठीक करने की जैविक औषध फ्री मे देते थे और कई लोगों को लाभ हुआ। हमारे ट्रस्ट का काम देखकर गुजरात सरकारने हमे अनुदान नही सिर्फ होस्पीटल बांधने के लिए ५ अेकड जमीन दी। हमने टाटा जैसे कई ट्रस्ट को इस काममे हाथ बढाने विनंती की मगर साथ न मिलने के कारण औषध देना बंध किया और जगह सरकार को लौटा दी। दवाई और जानकारी होने के बाजुद लोगो को घुटघुट कर मरना पडता है क्योंकि देश सेवा के लिए घनवान और सरकार का साथ-सहयोग नही मिल रहा।

आपका सेवक - **अशोक संघवी –** (सिर्फ सोम से शुक्र दुपहर २ से ४ मे Mobile: +91 9821169907)